Subject :- Sociology Date :- 14/07/2020
Class :- D-III (H) Paper :- 7th
Topic :- बेरोजगारी, कारण तथा इसके उपाय
By :- Dr. Shyamanand Choudhary
Guest Teacher, Marwari College, Darbhanga
online study Material No :- 113

बेरोजगारी का अर्थ →
प्रो० पिगू ने सच ही कहा है कि सामान्य व्यवहार में आनेवाले कई शब्दों में 'बेरोजगारी' ऐसा शब्द है, जिससे हमसभी परिचित हैं, लेकिन जिसकी परिशुद्ध परिभाषा देना कठिन है। इस सम्बन्ध में निहित कठिनाईयों के बावजूद अर्थशास्त्रियों तथा श्रम और सामाजिक समस्याओं में अभिरुची रखने वाले अन्य विद्वानों ने इसे परिभाषित करने के प्रयास किए हैं।
बेरोजगारी की कुछ परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं :-

(i) प्रो० पीगू के अनुसार → बेरोजगारी का अर्थ है "मजदूरी अर्जकों के वर्गों में केवल मजदूरी-कार्य से सम्बद्ध काम का अभाव।"

(ii) कार्ल प्रिबम के अनुसार → "बेरोजगारी श्रम-बाजार की वह स्थिति है, जिसमें श्रमशक्ति की आपूर्ति उपलब्ध नौकरियों की संख्या से अधिक होती है।"

(iii) फेयरचाईल्ड के शब्दों में → "सामान्य कार्यावधि में सामान्य मजदूरी पर तथा समान कार्य की दशाओं में सामान्य श्रमशक्ति के किसी सदस्य के लाभप्रद कार्य से बलपूर्वक या अनैच्छिक रूप से विलग हो जाने की स्थिति को बेरोजगारी कहते हैं।"

(iv) गिलीन के अनुसार → "बेरोजगारी वह दशा है जिसमें काम करने में समर्थ और उसके लिए इच्छुक तथा अपने और परिवार के लिए जीवन की आवश्यकताओं के व्यवस्था के लिए सामान्यतः अपने उपार्जनों पर निर्भर व्यक्ति लाभप्रद नियोजन प्राप्त करने में असमर्थ होता है।"

बेरोजगारी की कई अन्य परिभाषाएँ भी दी गई हैं। इन सभी परिभाषाओं तथा वास्तविक स्थितियों के अध्ययन से बेरोजगारी के कई तत्वों का बोध होता है, जिनमें निम्नलिखित महत्वपूर्ण हैं :-

(क) काम करने की इच्छा → बेरोजगारी की स्थिति तभी उत्पन्न होती है जब व्यक्ति में कार्य करने की इच्छा हो। कौशल और सामर्थ के रहते हुए भी अगर कोई व्यक्ति अपनी इच्छा से काम करना नहीं चाहता तो इससे बेरोजगारी की स्थिति उत्पन्न नहीं होती।

Scanned with CamScanner

(ख) काम करने का सामर्थ्य → अगर किसी व्यक्ति में काम करने की इच्छा तो हो, लेकिन उसमें बिमारी, असक्तता, बुढ़ापा आदि के कारण काम करने की शक्ति या सामर्थ्य नही हो तो उस स्थिति को भी बेरोजगारी की स्थिति नही कहते हैं।

(ग) मजदूरी के लिए काम → बेरोजगारी की स्थिति के लिए यह भी आवश्यक है कि काम के लिए इच्छुक और योग्यता रखने वाले व्यक्ति दूसरों के नियोजन में मजदूरी के लिए काम की खोज में हों।

(घ) पर्याप्त समय के लिए काम की खोज → बेरोजगारी की स्थिति के लिए यह भी आवश्यक है कि काम खोजने वाले व्यक्ति पर्याप्त समय या अवधी के लिए काम की खोज में हो तो साधारण केवल अल्प अवधी के लिए अति स्थायी रूप से काम की खोज को बेरोजगारी में सम्मिलित नही किया जाता।

सरल शब्दों में, बेरोजगारी उस स्थिति को कह सकते हैं, जब काम करने के इच्छुक एवं उसके लिए समर्थ व्यक्ति को प्रचलित मजदूरी-दर-पर तथा प्रचलित मानकों के अनुसार पर्याप्त अवधी के लिए काम नही मिल पाता है।

बेरोजगारी के कारण

बेरोजगारी के निम्नलिखित कारण हैं:-

(i) अपर्याप्त आर्थिक विकास → जिन देशों में उद्योग, कृषि, परिवहन के साधनों, सेवाओं आदि से सम्बद्ध आर्थिक गतिविधीयों अविकसित अवस्था में होती है उनमें अधिक संख्या में लोगों को काम नही दिलाया जा सकता। आर्थिक सम्पन्नता की स्थिति में निवेश के लिए समुचित राशी की व्यवस्था आसानी से की जा सकती है और रोजगार के अवसर बढ़ाए जा सकते हैं।

(ii) वृहत जनसंख्या → जिन देशों में अर्थव्यवस्था पर जनसंख्या का भार अधिक होता है, उसमें बेरोजगारी की संभावना भी अधिक होती है। घनी आबादी वाले विकासशील देशों में जनसंख्या में वृद्धि बेरोजगारी का अत्यन्त ही महत्वपूर्ण कारण होती है।

(iii) अविकसित उद्योग → उद्योग-धंधे रोजगार दिलाने के महत्वपूर्ण स्रोत होते हैं। जिन देशों में उद्योग-धंधे विकसित अवस्था में हैं, उनमें एक ओर तो लोगों को इस आर्थिक क्षेत्र में रोजगार के अवसर तो मिलते ही हैं साथ ही आर्थिक गतिविधीयों के अन्य क्षेत्र में भी नियोजन

③

के अवसर बढ़ते है।

(iv) कृषि का पिछड़ापन → कृषि प्रधान देशों में कृषि का पिछड़ापन भी ग्रामीण बेरोजगारी का महत्वपूर्ण कारण होता है। कृषि पर निर्भर अतिरिक्त श्रमशक्ति को अन्य आर्थिक क्षेत्रों में हस्तांतरित करने की संभावना कम होने के कारण कृषि पर दबाव बढ़ता जाता है और बढ़ी संख्या में लोग बेकार हो जाते हैं।

(v) दोषपूर्ण शिक्षा एवं प्रशिक्षण पद्धति → अगर देश की शिक्षा और प्रशिक्षण-व्यवस्था मे लोगों को ऐसे व्यवसायों या शिल्पों में कौशल प्राप्त करने का अवसर मिलता जिससे वे स्वनियोजित हो सकते तो उनके बीच बेरोजगारी की समस्या उतनी गंभीर नहीं होती।

(vi) निम्न उत्पादकता → आर्थिक गतिविधियों का चाहे जो भी क्षेत्र हो, देश में मजदूरी पर काम करनेवाले व्यक्तियों मे ईमानदारी से काम कर उत्पादकता बढ़ाने की उतनी लगन नहीं पाई जाती, जितनी पश्चिमी देशों में। इससे आर्थिक विकास की गति धीमी पड़ जाती है और साथ ही बेरोजगारी की समस्या गंभीर होती जाती है।

(vii) मुद्रास्फीति → मुद्रास्फीति से वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य में वृद्धि होती है जिससे लोग अपनी सीमित आय से इन्हे कम मात्रा में खरीदते है और विदेशी बाजार में उनकी माँग घट जाती है। पर्याप्त निवेश के अभाव में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना कठिन होता है और इस तरह बेरोजगारी बढ़ती जाती है।

(viii) प्राकृतिक प्रकोप तथा युद्ध → बाढ़, अकाल, भूकम्प, सुखाड़, तुफान आदि से सम्पति की व्यापक हानि होती है। युद्धों के कारण भी अर्थव्यवस्था को गहरा आघात पहुँचता है तथा अनेक लोग बेकार हो जाते है। फलस्वरूप बेरोजगारी बढ़ती है।

(ix) सरकारी नीति → जिन देशों मे सरकार बेरोजगारी की समस्या के प्रति उदासीन रहती है और उसे बाजार की शक्तियों द्वारा हल होने के लिए छोड़ देती है वहाँ बेरोजगारी का होना स्वाभाविक है।

(x) वैयक्तिक कारक → बेरोजगारी के कई वैयक्तिक कारक भी होते है जैसे- शारीरिक और मानसिक अशक्तता, बीमारी, दोषपूर्ण व्यक्तित्व, उम्र तथा व्यावसायिक अयोग्यता इत्यादि।

<u>बेरोजगारी के दुष्परिणाम</u> → निर्धनता की तरह बेरोजगारी भी व्यक्ति और समाज को तरह-तरह से प्रभावित करती रहती है। इसके कुछ

मुख्य दुष्परिणाम है :-

(क) वैयक्तिक विघटन (ख) स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएँ (ग) आर्थिक परनिर्भरता एवं ऋणग्रस्तता (घ) पारिवारिक विघटन (ङ) अपराध, भिक्षावृत्ति एवं वेश्यावृत्ति मे वृद्धि (च) आर्थिक एवं सामाजिक विकास मे बाधा (छ) सामाजिक एवं राजनीतिक अस्थिरता।

बेरोजगारी दूर करने हेतु सुझाव

भारत के विशेष संदर्भ मे बेरोजगारी उन्मूलन के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते है :-

(i) आर्थिक विकास की गति तेज करना → आर्थिक विकास की गति तेज होने से ही रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के लिए साधन सहजता से जुटाए जा सकते है और अधिक से अधिक लोगों का आर्थिक क्रिया-कलापो मे लगाया जा सकता है।

(ii) बचत और निवेश को प्रोत्साहन → रोजगार उपलब्ध कराने के लिए आर्थिक क्रिया-कलाप के विभिन्न क्षेत्रों जैसे-उद्योग, कृषि, पशुपालन, निर्माण, परिवहन, सेवा आदि क्षेत्रों मे निवेश की आवश्यकता होती है। निवेश के लिए राशी बचत से ही आ सकती है।

(iii) जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण → साधनों की कमी के कारण श्रमशक्ति मे आने वाले सभी लोगों के लिए रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना संभव नही है। अतः जब तक देश मे जनसंख्या वृद्धि पर प्रभावी नियंत्रण नही किया जाता तब तक यहाँ बेरोजगारी का स्थायी समाधान नही होगा।

(iv) लघु उद्योगों के विकास पर ओर → लघु और कुटीर उद्योगों मे रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने की अधिक समस्याए होती है। देश मे ऐसे उद्योगो के विकास के लिए संसाधनो की कमी नही है। ब्रिटिश शासनकाल मे बेरोजगारी की समस्या के पिछे लघु उद्योग-धंधो के ह्रास का भी महत्वपूर्ण हाथ रहा है।

(v) श्रमप्रधान युक्तियों को प्रोत्साहन → आधुनिक आर्थिक क्रियाओ जैसे उत्पादन, वितरण, वाणिज्य-व्यापार सेवा आदि कई क्षेत्रों मे श्रम-बचत युक्तियों का व्यापक प्रयोग होता है। भारत मे भी इन युक्तियों का प्रयोग होने लगा है लेकिन देश मे व्याप्त बेरोजगारी की गंभीर समस्या को ध्यान मे रखते हुए इन युक्तियों का प्रयोग अनिवार्यता

Scanned with CamScanner

⑤

vi) कार्योन्मुख प्रशिक्षण की सुविधाएँ → भारत में बेरोजगारी की समस्या के प्रभावी और स्थायी समाधान के लिए स्वनियोजन को अधिक से अधिक प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है। स्वनियोजन में वृद्धि के लिए उद्यमी युवकों को उपयुक्त व्यवसायों और शिल्पों में प्रशिक्षण देने की व्यापक व्यवस्था की आवश्यकता है।

vii) नियोजन कार्यालयों का विस्तार → देश में बेरोजगारों को नियोजन के अवसरों की जानकारी देने और उपलब्ध रोजगार की सूचनाएँ रखने में नियोजन कार्यालयों की वर्तमान भूमिका असंतोषजनक है। देश में इन कार्यालयों के विस्तार और निर्धारित श्रेणी की नौकरियों को केवल इन्हीं कार्यालयों द्वारा भरी जाने की सुव्यवस्थित प्रणाली से बेरोजगारी की मात्रा में कमी लाई जा सकती है।

viii) अन्य उपाय → बेरोजगारी दूर करने के कुछ अन्य उपाय हैं - भ्रष्टाचार का निवारण, अपव्यय पर रोक, अनुत्पादक कार्यों पर कम व्यय, विदेशों में प्रवसन को प्रोत्साहन तथा व्यावसायिक मार्गदर्शन की व्यवस्था।

Shyamanand Choudhary
M.M. College
Department of Sociology

Scanned with CamScanner